मुहम्मद तुग़लक के प्रशासन व प्रशासनिक योजनाओं का विवरण

Ranvir Singh [1], Babli Rani [2]

[1] Research Scholar, [2] Research Supervisor, Associate Professor,
Department of History, Sunrise University,
Rajasthan.

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 11, Issue 4, (July-August 2023)

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

Abstract

सुल्तान मुहम्मद तुग़लक की जिस कार्य के लिए सबसे अधिक आलोचना की जाती है, वह उसकी प्रशासनिक योजनाएं थी। उसके समकालीनों (ज़ियाउद्दीन बरनी व इब्नबत्तूता) ने उसकी इन प्रशासनिक योजनाओं को राज्य के विनाश के कारण माना है। ज़ियाउद्दीन बरनी लिखता है कि मैंने यह उल्लेख किया है कि किस प्रकार सुल्तान मुहम्मद तग़लक युवावस्था से ही ऐसी बाते करने का प्रयास किया करता था जिनका होना संभव नहीं था, नये आदेशों के अतिरिक्त तीन या चार योजनाएं सुल्तान मुहम्मद के मस्तिष्क में घूमा करती थी। सुल्तान को यह आशा थी कि उनकी पूर्ति द्वारा समस्त संसार उसके दासों के अधीन हो जाएगा। सुल्तान ने इन योजनाओं की पूर्ति तथा उनको कार्यान्वित कराने हेतू अपने किसी भी परामर्शदाता, मित्र अथवा हितैषी से परामर्श न किया और जो कुछ भी उसके हृदय में आया उसे उसने पूर्णतया उचित समझ लिया। उन पर आचरण करने तथा उनके प्रचार से उसका सुव्यवस्थित राज्य उसके हाथ से निकल गया। समस्त लोग उससे घृणा करने लगे। राजकोष रिक्त हो गया और अशांति पर अशांति तथा अव्यवस्था पर अव्यवस्था पैदा हो गई। जैसे जैसे सुल्तान अपनी नवीन आविष्कृत योजनाओं का पालन कराने के लिए बहुत बड़ी संख्या में आदेश निकाला करता, वैसे ही सर्वसाधारण अधिक संख्या में विद्रोह करने लगते।

Introduction

क्या ये योजनाएं वास्तव में इतनी ही काल्पनिक और असम्भव थी ? जितनी की उसके समकालीनों ने माना है। आधुनिक इतिहाकारों ने इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयत्न किया है और सुल्तान की योजनाओं को महान उद्देश्यों से प्रेरित बताया है। ज़ियाउद्दीन और इब्नबत्तूता दोनों ने ही सुल्तान मुहम्मद तुग़लक के प्रशासन तथा प्रशासनिक संस्थाओं का विवरण प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से छोड़ा है। ज़ियाउद्दीन बरनी का विवरण केवल ख़राज की वसूली की नियमितता तक ही सीमित है, जबकि इब्नबत्तूता ने सुल्तान मुहम्मद तुग़लक के नागरिक व सैनिक प्रशासन का विस्तृत विवरण दिया है।

बरनी व इब्नबत्तूता दोनों के विवरण इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि प्रशासनिक ढ़ाँचे में सबसे ऊपर स्वयं सुल्तान था। सभी नये आदेश उसी के द्वारा जारी किये जाते थे।बरनी लिखता है कि दीवाने खरीतादार में, जिसका नाम दीवाने तलबे अहक़ामे तौक़ी पड़ गया था, प्रतिदिन शाही तौक़ी (शाही आदर्श वाक्य की मुहर) से 100, 200 नये आदेश प्राप्त हो जाते थे। उन नये आदेश के अनुसार इक़लीमां तथा निकट और दूर के वालियों, मुक़्तो तथा मुतसर्रिफ़ों को, उन्हें कार्यान्वित कराने के लिए विवश किया जाता था।

दोनों के विवरण इस तथ्य की पुष्टि भी करते हैं कि सुल्तान स्वयं सबसे बड़ा सैनिक अधिकारी था तथा स्वयं युद्ध का संचालन करता था या प्रमुख सैनिक अधिकारी के अधीन सेना को भेजा दिया जाता था। इब्नबत्तूता लिखता है कि जब सुल्तान ने जलालुद्दीन एहसान शाह के माबर में विद्रोह का समाचार सुना तो स्वयं उससे युद्ध करने के लिए निकल पड़ा। कूश्के जार (सोने का किला) नामक स्थान पर आठ दिन तक ठहर कर सेना के लिए सामग्री एकत्रित करता रहा।

बरनी का विवरण भी इस तथ्य की पुष्टि करता है, गुजरात में विद्रोह होने पर, सुल्तान ने क़ुतलुग़ खां को विद्रोह दबाने की आज्ञा न देकर स्वयं प्रस्थान किया। बरनी लिखता है कि सुल्तान को क़ुतलुग़ खाँ की प्रार्थना, जो राजव्यवस्था के हित में थी, पसंद न आई। उसने उसकी प्रार्थना का कोई उत्तर न दिया और आदेश दिया कि शीघ्र-अतिशीघ्र कूच की तैयारी प्रारम्भ कर दी जाए।

सुल्तान प्रशासन के सभी अधिकारियों की नियुक्ति भी करता था। बरनी व इब्नबत्तूता दोनों के विवरण इस तथ्य की भी पुष्टि करते हैं। बरनी बड़े ही दुःखी हृदय से लिखता है कि उसने (सुल्तान) ने अज़ीज़ खम्मार, उसके भाई फ़िरोज़ हज्ज़ाम (नाई), मनका तब्बास (बावर्ची), मसऊद खम्मार, लद्धा माली तथा अन्य लोगों तथा अन्य ऐसे लोगों को, जो कमीनां में रत्न के समान थे, सम्मान प्रदान किया। उन्हें उच्च पद तथा अक़्ताये प्रदान की। इब्नबत्तूता अधिकारी की नियुक्तियों के संदर्भ में कई अन्य तथ्यों पर भी प्रकाश डालता है, जैसे यदि कोई विदेशी सुल्तान की सेवा से नियुक्ति होना चाहता था तो उसे इस प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करने पड़ते थे कि वह भारत में रहने के लिए आया है और एक बार शाही सेवा में नियुक्त होने पर वापिस नहीं जाएगा। स्वयं इब्नबत्तूता को भी इस प्रकार के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करने पड़े थे।

अधिकारियों की नियुक्ति के सम्बन्ध मं कुछ योग्यताएं भी निश्चित की गई थी और परीक्षाएं ली जाती थी परन्तु सुल्तान किसी अधिकारी की बिना परीक्षा के भी नियुक्ति कर सकता था, जैसे ख़ुदावबन्दजादा ज़ियाउद्दीन को अमीर-ए-दाद के पद पर नियुक्त किया। यह पद किसी प्रमुख अमीर को ही दिया जाता था। इसका कार्य काज़ी के दरबार में बैठना और अन्य अमीरों तथा अधिकारीयों द्वारा जारी किए पत्रों को काज़ी के समक्ष प्रस्तुत करना था। इसी प्रकार इब्नबत्तूता को भी 12,000 टंका पर दिल्ली का काज़ी नियुक्त किया था।

प्रशासनिक अधिकारियों के वेतन के सम्बन्ध मं दोनों के विवरण समान थे कि वेतन नक़द तथा अक़्ता के रूप मे अदा किया जाता था। बरनी खुरासान अभियान की सेनाओं के बारे में लिखाता है कि प्रथम वर्ष उन्हें ख़जाने तथा अक़्ताओं से वेतन दिया गया।

इसी प्रकार इब्नबत्तूता लिखाता है कि ख़ुदावन्द ज़ादा ज़ियाउद्दीन को उसके पद के लिए 50,000 सोने के टंके प्रतिवर्ष व इतनी ही राशी की अक़्ता प्रदान की गई थी। इसी प्रकार अमीर बख़्त को, जो महालेखा-परीक्षक (नजर-ए-हिसाफ़्त-ए-ख़ास) के पद पर नियुक्त किया था, 40,000 सोने के टंके प्रतिवर्ष तथा इतनी ही राशि का अक़्ता दिया गया था। इब्नबत्तूता को भी दिल्ली के पास दो गांव का भूराजस्व व 12,000 टंके प्रतिवर्ष वेतन के रूप मे दिए गए थे।

इब्नबत्तूता के विवरण से एक स्थान पर सुल्तान को सलाह के लिए एक परिषद का भी पता चलाता है, जिस पर बरनी का विवरण मौन है। आईनउल्मुल्क के विद्रोह पर इब्नबत्तूता ने लिखाता है कि जब सुल्तान को एक गुप्तचर इब्न मलिक से आईनुलमुल्क के भागने तथा नदी पार कर लेने की सूचना मिली तो उसने राजधानी वापिस जाकर सेना

एकत्रित करके युद्ध करने का निश्चय किया। इस योजना के विषय में उसने अपने राज्य के प्रमुख अधिकारियों से परामर्श किया। उन्होंने इस योजना का विरोध किया और कहा कि यदि आपने ऐसा किया तो उसे यह बात पता चल जाएगी और उसके पास समस्त विद्रोही तथा दुर्भावना वाले अन्य लोग इकट्ठे हो जाएगे। अतः उसकी शक्ति बढ़ने के पूर्व ही उसका विनाश कर दिया जाए तो उचित है। सुल्तान ने उनकी बात स्वीकार कर ली। इससे स्पष्ट है कि सुल्तान प्रशासिनिक विषयों पर अपने प्रमुख अधिकारियों से परामर्श करता था परन्तु वह परामर्श को माने यह आवश्यक नहीं था।

इब्नबत्तूता का विवरण वज़ीर और प्रमुख अधिकारियों की स्थिति पर भी प्रकाश डालाता है। मुहम्मद तुग़लक के काल में अहमद अयाज़ वज़ीर के पद पर नियुक्त था तथा सुल्तान के युद्ध अभियानों के दौरान वह राजधानी में प्रशासन की देखभाल करता था। वह स्वयं भी विद्रोह को दबाने के लिए सैनिक अभियानों का नेतृत्व करता था। जैसे बहाउद्दीन गुरतास्प द्वारा सागर में विद्रोह तथा हलाज़ून के लाहौर में विद्रोह के समय स्वयं वजीर ने सुल्तान की अनुपस्थिति में विद्रोह को दबाया था। वह सुल्तान की अनुपस्थिति में आने वाले अतिथियों का भी भव्य स्वागत करता था और उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान कर सकता था। जब इब्नबत्तूता भारत आया तो सुल्तान कन्नौज में था। वज़ीर ने ही उसका स्वागत किया था। इब्नबत्तता लिखता कि दूसरे दिन जब हम महल में गए और वज़ीर के समक्ष अभिवादन किया तो उसने मुझे दो थैलियाँ हजार-हजार चाँदी के दीनार दिरहिमों की दी और कहा यह सरगुरस्ती अर्थात् तुम्हारे सिर धोने के लिए है । वज़ीर किसी भी खतरे के समय सैनिक अभियान पर भी बुलाया जा सकता था जैसे आइनूलमुल्क के स्वर्गद्वारी में विद्रोह के समय उसे सुल्तान ने सैनिक व युद्ध समग्री एकत्रित करने के लिए संदेश भेजा।

बरनी व इब्नबत्तूता दोनां ने सुल्तान मुहम्मद तुग़लक के शासन काल के भूराजस्व प्रशासन पर भी स्पष्ट विचार दिए हैं। बरनी लिखाता है कि इक़लीमों का खराज़ देहली के प्रदेशों के खराज़ के समान क़ुश्के (महल) हजार स्तून में निश्चित हुआ था। इन इक़लीमों के वज़ीर, वाली, मुतसर्रिफ़ अपनी आय-व्यय का लेखा देहली के दीवाने विज़ारत में भेजा करते थे। सुल्तान मुहम्मद के सिंहानारोहण के कुछ प्रारम्भिक वर्षों में देहली, गुजरात, मालवा देवगिरि, तिलंग, कम्पिला, घोर समुन्द्र, (द्वारसमुन्द्र) माबर, तिरहुट, लखनौती, सतगांव तथा सुनारगांव का खराज़ इस प्रकार सुव्यस्थित हो गया था कि उपुर्यक्त इक़लीमों तथा प्रान्तों का लेखा दूरी के बावजूद देहली के दीवाने विज़ारत में इस प्रकार जाँचा जाता था, जिस प्रकार दोआब के कस्बों तथा ग्रामों का लेखा। जिस प्रकार लेखा प्राप्त होने तथा हिसाब की जांच के उपरांत, हवाली (देहली के आसपास) की अक़्ता के कारकुनों तथा मुतसिर्रिफ़ों से शेष धन, अक़्ता का फ़वाजिल (अक़्ता के व्यय से बचा हुआ धन) वसूल कर लिया जाता था। कारकुनों की सच्चाई की जांच होती थी तथा एक दांग अथवा दिरहम की भी भूल नहीं होती थी, उसी प्रकार इक़लीमो तथा दूर के प्रदेशों के नायबों, वालियों मुतसर्रिफ़ों तथा कारकुनो से, इक़लीमों के अत्याधिक सुव्यवस्थित होने फलस्वरूप हिसाब-किताब किया जाता था और उन से मुतालबा (जो कुछ अदा करना हो) लिया जाता था। कोई भी विद्रोही मुक़द्दम, विरोधी ख़ूत तथा ख़राज़ न अदा करने वाले ग्राम शेष न रह गया था। उन इक़लीमो तथा प्रदेशों का शेष कर तथा ख़राज़, दुआब के कस्बों और ग्रामों के समान कारकुनों तथा मुतसर्रिफ़ों से बड़ी कठोरता से वसूल कर लिया जाता था।

इस प्रकार बरनी केवल भूराजस्व की वसूली की नियमितताआं का वर्णन ही करता था परन्तु वह मुहम्मद तुग़लक के शासन काल में मुक़ातेये (भूराजस्व को ठेके पर एकत्रित करने की प्रथा) का भी वर्णन करता है। जिसके कारण राज्य में अनेक विद्रोह हुए क्योंकि मुक़ातेये की रक़म वसूल न होने के कारण अनेक अधिकारीयों ने सुल्तान के दण्ड के भय से विद्रोह कर दिया। इस प्रकार वह मुहम्मद तुग़लक के काल में होने वाले विद्रोह के कारणो के सही स्वरूप को समझने की कुंजी प्रदान करता है। इब्नबत्तूता का विवरण बरनी द्वारा बताए गए अधिकारियों के नामों की

पुष्टि तो करता ही है साथ ही साथ वह गांव स्तर से ऊपर तक के भूराजस्व प्रशासन का विवरण भी देता है। इब्नबत्तूता ने भूराजस्व प्रशासन की सबसे छोटी इकाई सदी बताई है। वह लिखता है कि सदी इस देश में सौ गांवों के समूह को कहते हैं। नगरों के अधीन स्थान सदीयों में विभाजित था। प्रत्येक सदी पर एक जौतरी (चैधरी) होता था। वह उन स्थानों के काफ़िरों का अधिकारी होता है। कर एकत्रित करने के लिए एक मुतसर्रिफ़ होता था।वह हमें यह भी सूचित करता है कि गांव मं शांति बनाए रखने वाले अधिकारी, जिसे हाक़िम कहा जाता था। इससे ऊपर के अधिकारी को अमील या मुफ़्ति कहा जाता था। मुफ़्ति प्रशासन में एक महत्त्वपूर्ण अधिकारी था। इसे गांव अक़्ता के रूप में मिलते थे। जिनका प्रशासनिक उत्तरदायित्व उन पर था, जो पैतृक नहीं, बल्कि हस्तांरित होती थी। वह एकत्रित किए गए भूराजस्व में से दसवें हिस्से का अधिकारी होता था। उसका उत्तरदायित्व भूराजस्व अधिकारी वाली-उल-ख़राज के समान था। नगरों का प्रशासन एक अमीर के अधीन होता था, जिसे कमाण्ड़ेट कहा जाता था। 734 हि°/1333 में, जिसका फेसूद्दीन अलाउल्मुल्क, जिसका लाहौरी पर अधिकार क्षेत्र था, कि स्थिति इसी प्रकार की थी। उसे कोई नक़द वेतन नहीं दिया जाता था बल्कि वह भूराजस्व के बीसवें हिस्से का नक़द हकदार होता था। कुल 60 लाख में से वह 3 लाख रखता था और शेष प्रान्तीय अधिकारी के पास भेज देता था। इन्हीं शर्तों पर सुल्तान ने नगरों का प्रशासन इन अधिकारीयों को सौंप दिया था। ये अपनी सेना रखते थे। यह एक प्रकार का स्थानीय शासन था।

References

[1] बरनी, ज़ियाउद्दीन, तारीख़-ए-फ़िरोज़शाही अनुवादित, एस°ए°ए° रिज़वी, आदि तुर्क कालीन भारत, ख़लजी कालीन भारत, तुग़लक कालीन भारत, भाग-1, तुग़लक कालीन भारत, भाग-2, अलीगढ़ युनिवर्सिटी, अलीगढ़, प्रथम संस्करण, 1956.

[2] हुसैन, मैंहदी, द रेहला आफ इब्नबत्तूता, ओरियटल इन्सटीटूट, बडौदा, प्रथम संस्करण, 1953.

[3] गिब्ब, एच°ए°आर°, इब्नबत्तूता टै°वल्ज़ इन एशिया एण्ड अफ्रीका, पिलीग्रीम बुक प्राईवेट लिमटिड, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1998.

[4] निज़ामी, के°ए°, आन हिस्ट्री एण्ड हिस्ट्रोरियनज़ आफ मिडिवल इण्डिया, मुंशी राम मनोहर लाल, नई दिल्ली, 1987.

[5] हार्डी, पीटर, हिस्ट्रोरियनज़ आफ मिडिवल इण्डिया, मुंशी राम मनोहर लाल, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1997.

[6] हुसैन, मोहीबुल, हिस्ट्रोरियनज़ आफ मिडिवल इण्डिया, मुंशी राम मनोहर लाल, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1982.

[7] सिद्दकी, आई°एच°, प्रशो-अरेबिक सोर्सज़ आफ इम्फरमेशन आन द लाईफ एण्ड कण्डीशन इन द सल्तनत आफ देहली, मुंशी राम मनोहर लाल, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1992.